सामाजिक संस्था सम्पूर्णा
समग्र विकास की ओर अग्रसर
गैर सरकारी संगठन

आलेख

'रोज खत्म होती जिन्दगी'

डॉ. शोभा विजेन्द्र
संस्थापिका अध्यक्षा

गीता आज बहुत ही निराश, हताश और परेशान है। इस जनरेशन गेप ने सदियों पुरानी हमारी परिवार संस्था पर गहरी चोट की है। इसमें माता-पिता का आदर और सम्मान सबसे पहले दफ़न हुआ है। तर्कों की बात करने वाले इस युवा पीढ़ी के नौजवान शायद भावनाओं का आदर करना भूल ही गए हैं। सत्य तो यही है कि जब मनुष्य भाव शुन्य होता है तो उसमें और पशु में कोई अंतर नहीं रह जाता है। किंतु इन निष्ठुर भावनाहीन युवाओं को यह समझाना अपने आप में एक बहुत ही कठिन कार्य है।

गीता एक प्रौढ़ा है। जिसने शादी से पूर्व और शादी के बाद एक संयुक्त परिवार में अपना जीवन बिताया। उसने कभी सोचा ही नहीं कि एक परिवार का मतलब 'हम दो और हमारे दो' होते हैं। वह तो दादा-दादी, नाना-नानी, मामा-मामी और न जाने कितने रिश्तों को सहजते हुए युवा हुई। उसे याद है कि वह कौन से स्कूल में पढ़ेगी और क्या पढ़ेगी इन सबका निर्णय घर के अंदर बैठे उसके दादी, ताऊ, चाचा मिलकर लिया करते थे। यहां तक कि शादी के निर्णय में भी उसके दादा-दादी ने ही वर को देखा और उसको विवाह के बंधन में बांध दिया।

यहां पर मैं आपको बताना चाहूंगी कि गीता एमएससी जूलॉजी (Zoology) है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर उसकी गहरी पकड़ है। समाज में उसके ओज़ और सोच के कारण उसको हमेशा ही सर्वश्रेष्ठ पद पर स्थान मिलता है। विवाह के पश्चात भी वह बहुत ही कर्मठ, सजग और सबकी सहयोगी बनकर ही अपने

जीवन को आगे चला रही है। किंतु आज उसकी हताशा और निराशा छुपाए भी नहीं छुप रही। उसका आहत मन बार-बार प्रश्न करता है कि जिस परिवार को आगे बढ़ाने के लिए और समाज को एक उपयोगी नागरिक देने हेतु ही उसने अपने बच्चों की लालना और पालना की। किंतु यह कैसी बिडम्बना है कि उसकी सारी मेहनत जैसे व्यर्थ ही हो गई।

आज तो जैसे हद ही हो गई। पुत्र से फ़ोन पर बात हुई। जो दूर देश कनाडा रहता है। जब माँ ने कोरोना के पश्चात उससे आने के लिए कहा तो वह कनाडा के सर्दवादियों से चिल्लता हुआ बोला कि माँ तुम्हें केवल अपनी जान की फिक्र है। तुम क्यों मुझे बुलाना चाहती हो? अरे! गीता तो उत्तर विहीन हो गई, स्तब्ध हो गयी। और सच कहूं कि गमगीन हो गई। सोचने लगी कि क्या वह सच में ही इतनी निष्ठुर है कि उसका ही पुत्र, उसे प्राणघाती कहे। यह तो असहनीय है। जिस पुत्र को पालपोश कर बढ़ा किया वो पैसों के मद और सुविधाओं के वश होकर मां को ही प्राणघाती कहने लगा। यह सहा ही नहीं जा सकता। न जाने कितनों ने दिन-रात समझाया और सलाह दी कि इस निर्मोंही समाज में अपनी चेतना को परिष्कृत करने का एक ही साधन है जिसका नाम केवल और केवल अध्यात्म है। इस सृष्टि में विचरण करने वाले हम सब स्वार्थ, लालच, आलस्य, मद जैसी कितनी बीमारियों से हमेशा ही जूझते रहते हैं। यहाँ तक कि यह भी भूल जाते हैं कि मृत्यु भी सच है। यह सब कुछ नश्वर है। कोरोना ने तो सिखाने की बहुत कोशिश की। लेकिन हम सीख नहीं पाए।

गीता आज यह निर्णय लेती है कि वह निर्बाद्ध रूप से आत्मिक उन्नित के लिए प्रयासरत रहेगी। इस सृष्टि के सभी प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो, गऊ माता की जय हो, सनातन धर्म की जय हो, इन जीवन मुल्यों के लिए समर्पित भाव से कार्य करेगी और इसके लिए रोज खत्म होती जिन्दगी को हमेशा के लिए रोक देगी। उसने स्वीकार कर लिया कि जिंदगी न प्रारंभ होती है न समाप्त होती है। पुत्र और पुत्री के मोह में यह जीवन शायद ऐसे ही रोज़ खत्म होता होगा पर वह इस पर विराम लगाएगी। उसने तुरंत अपनी एक सहेली को फ़ोन किया। जो बहुत दिन पहले अपनी जिंदगी की शुरूआत कर चुकी थी। बुजुर्गों की सेवा में लीन वह हमेशा ही कहा करती थी कि उसकी यह जिंदगी कभी समाप्त नहीं हो सकती। आज गीता ने भी ठान लिया है कि उसकी जिंदगी का विराम नहीं होगा। उसके प्रयास, उसका जोश, उसकी सजगता, उसका स्नेह, उसका समर्पण अनवरत है। .....